३. निन्दा रस

– हरिशंकर परसाई

लेखक परिचय :

सुप्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य साहित्यकार हरिशंकर परसाई जी का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के अन्तर्गत जमानी नामक स्थान में २२ अगस्त १९२४ ई. को हुआ था। प्रारम्भ से लेकर स्नातक स्तर तक की शिक्षा मध्यप्रदेश में ही हुई। तदोपरांत नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. किया। आपने खण्डवा में ६ माह तक अध्यापन कार्य किया तथा सन् १९४१ से १९४३ ई. तक २ वर्ष जबलपुर में स्पेंस ट्रेनिंग कालेज में शिक्षण कार्य किया। आप अध्यापन कार्य में कुशल थे। परसाई जी नियमित रूप से 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'धर्मयुग' तथा अन्य पत्रिकाओं के लिए अपनी रचनाएँ लिखते रहे। आपका निधन १० अगस्त १९९५ ई. में हुआ।

प्रमुख रचनाएँ – कहानी संग्रह : 'हँसते हैं, रोते हैं', 'जैसे उनके दिन फिरे'। उपन्यास : 'रानी नागफनी की कहानी', 'तट की खोज'। निबंध संग्रह : 'तब की बात और थी', 'भूत के पाँव पीछे', 'बेईमान की परत', 'पगडंडियों का जमाना', 'सदाचार का तावीज', 'शिकायत मुझे भी है', 'और अन्त में'।

प्रस्तुत व्यंग्य रचना 'निन्दा रस' एक सुन्दर कलाकृति है। लोग एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या भाव से निन्दा करते हैं, कुछ लोग अपने स्वभाव-वश अकारण ही निन्दा करने में रस लेते रहते हैं तथा कुछ लोग अपने आपको बड़ा सिद्ध करने के लिए दूसरों की निन्दा करने में लगे रहते हैं। ऐसे निन्दकों पर हरिशंकर परसाई जी ने करारा प्रहार किया है।

मनुष्य के सहज गुण 'निन्दा' करने की आदत से परिचित कराने तथा अपने आप को यथासंभव उससे दूर रखने के उद्देश्य से प्रस्तुत रचना चयनित है।

'क' कई महीने बाद आये थे। सुबह चाय पीकर अखबार देख रहा था कि वे तूफान की तरह कमरे में घुसे, 'साइक्लोन' की तरह मुझे अपनी भुजाओं में जकड़ा तो मुझे धृतराष्ट्र की भुजाओं में जकड़े भीम के पुतले की याद आ गयी। यह धृतराष्ट्र की ही जकड़ थी। अंधे धृतराष्ट्र ने टटोलते हुए पूछा, 'कहाँ है भीम? आ बेटा, तुझे कलेजे से लगा लूँ।' और जब भीम का पुतला उनकी पकड़ में आ गया तो उन्होंने प्राणघाती स्नेह से उसे जकड़कर चूर कर डाला।

ऐसे मौके पर हम अक्सर अपने पुतले को अंकवार में दे देते हैं, हम अलग खड़े देखते रहते हैं। 'क' से क्या मैं गले मिला? क्या मुझे उसने समेटकर कलेजे से लगा लिया? हरगिज नहीं। मैंने अपना पुतला ही उसे दिया। पुतला इसलिए उसकी भुजाओं में सौंप दिया कि मुझे मालूम था कि मैं धृतराष्ट्र से मिल रहा हूँ। पिछली रात को एक मित्र ने बताया कि 'क' अपनी ससुराल आया है और 'ग' के साथ बैठकर शाम को दो-तीन घंटे तुम्हारी निन्दा करता रहा। इस सूचना के बाद जब आज सबेरे वह मेरे गले लगा तो मैंने शरीर से अपने मन को चुपचाप खिसका दिया और निःस्नेह, कँटीली देह उसकी बाँहों में छोड़ दी। भावना के अगर काँटे होते तो उसे मालूम होता कि वह नागफनी को कलेजे से चिपटाये है। छल का धृतराष्ट्र जब आलिंगन करे, तो पुतला ही आगे बढ़ाना चाहिए।

पर वह मेरा दोस्त अभिनय में पूरा है। उसके आँसू भर नहीं आये, बाकी मिलन के हर्षोल्लास के सब चिन्ह प्रकट हो गये – वह गहरी आत्मीयता की जकड़, नयनों से छलकता वह असीम स्नेह और वह स्नेहसिक्त वाणी।

बोला, 'अभी सुबह की गाड़ी से उतरा और एकदम तुमसे मिलने चला आया, जैसे आत्मा का एक खण्ड दूसरे खण्ड से मिलने को आतुर रहता है।' आते ही झूठ बोला कम्बख्त। कल का आया है, यह मुझे मेरा मित्र बता गया था। इस झूठ में कोई प्रयोजन शायद उसका न रहा हो। कुछ लोग बड़े निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं। वे आदतन, प्रकृति के वशीभूत झूठ बोलते हैं। उनके मुख से निष्प्रयास, निष्प्रयोजन झूठ ही निकलता है। मेरे एक रिश्तेदार ऐसे हैं। वे अगर बम्बई जा रहे हैं और उनसे पूछे, तो वे कहेंगे, 'कलकत्ता जा रहा हूँ।' ठीक बात उनके मुँह से निकल ही नहीं

सकती। 'क' भी बड़ा निर्दोष, सहज-स्वाभाविक मिथ्यावादी है।

वह बैठा। कब आये? कैसे हो? — वगैरह के बाद उसने 'ग' की निन्दा आरम्भ कर दी। मनुष्य के लिए जो भी कर्म जघन्य हैं वे सब 'ग' पर आरोपित करके उसने ऐसे गाढ़े काले तारकोल से उसकी तस्वीर खींची कि मैं यह सोचकर काँप उठा कि ऐसी ही काली तस्वीर मेरी 'ग' के सामने इसने कल शाम को खींची होगी।

सुबह की बातचीत में 'ग' प्रमुख विषय था। फिर तो जिस परिचित की बात निकल आती, उसी को चार-छह वाक्यों में धराशायी करके वह बढ़ लेता।

अद्भुत है मेरा यह मित्र। उसके पास दोषों का 'केटलाग' है। मैंने सोचा कि जब वह हर परिचित की निन्दा कर रहा है तो क्यों न मैं लगे हाथों विरोधियों की गत, इसके हाथों करा लूँ। मैं अपने विरोधियों का नाम लेता गया और वह उन्हें निन्दा की तलवार से काटता चला। जैसे लकड़ी चीरने की आरा मशीन के नीचे मजदूर लकड़ी का लट्ठा खिसकाता जाता है और वह चीरता जाता है, वैसे ही मैंने विरोधियों के नाम एक-एक कर खिसकाये और वह उन्हें काटता गया। कैसा आनन्द था। दुश्मनों को रणक्षेत्र में एक के बाद एक कटकर गिरते हुए देखकर योद्धा को ऐसा ही सुख होता होगा।

मेरे मन में गत रात्रि के उस निन्दक मित्र के प्रति मैल नहीं रहा। दोनों एक हो गये। भेद तो रात्रि के अंधकार में ही मिटता है, दिन के उजाले में भेद स्पष्ट हो जाते हैं। निन्दा का ऐसा ही भेद-नाशक अँधेरा होता है। तीन-चार घंटे बाद, जब वह विदा हुआ तो हम लोगों के मन में बड़ी शांति और तुष्टि थी।

निन्दा की ऐसी ही महिमा है। दो-चार निन्दकों को एक जगह बैठकर निन्दा में निमग्न देखिए और तुलना कीजिए कि दो-चार ईश्वर-भक्तों से जो रामधुन लगा रहे हैं। निन्दकों की-सी एकाग्रता, परस्पर आत्मीयता, निमग्नता भक्तों में दुर्लभ है। इसलिए संतों ने निन्दकों को 'आँगन कुटी छवाय' पास रखने की सलाह दी है।

कुछ 'मिशनरी' निन्दक मैंने देखे हैं। उनका किसी से बैर नहीं, द्वेष नहीं। वे किसी का बुरा नहीं सोचते। पर चौबीसों घंटे वे निन्दा कर्म में बहुत पवित्र भाव से लगे रहते हैं। उनकी नितांत निर्लिप्तता, निष्पक्षता

इसी से मालूम होती है कि वे प्रसंग आने पर अपने आप की पगड़ी भी उसी आनन्द से उछालते हैं, जिस आनन्द से अन्य लोग दुश्मन की। निन्दा इनके लिए 'टॉनिक' होती है।

ट्रेड यूनियन के इस जमाने में निन्दकों के संघ बन गये हैं। संघ के सदस्य जहाँ-तहाँ से खबरें लाते हैं और अपने संघ के प्रधान को सौंपते हैं। यह कच्चा माल हुआ। अब प्रधान उनका पक्का माल बनायेगा और सब सदस्यों को 'बहुजन हिताय' मुफ्त बाँटने के लिए दे देगा। यह फुरसत का काम है, इसलिए जिनके पास कुछ और करने को नहीं होता, वे इसे बड़ी खूबी से करते हैं। एक दिन हमसे एक ऐसे संघ के अध्यक्ष ने कहा, ''यार आजकल लोग तुम्हारे बारे में बहुत बुरा-बुरा कहते हैं।'' हमने कहा, ''आपके बारे में मुझसे कोई भी बुरा नहीं कहता। लोग जानते हैं कि आपके कानों के घूरे में इस तरह का कचरा मजे में डाला जा सकता है।''

ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा भी होती है। लेकिन इसमें वह मजा नहीं जो मिशनरी भाव से निन्दा करने में आता है। इस प्रकार का निन्दक बड़ा दु:खी होता है। ईर्ष्या-द्वेष से चौबीसों घंटे जलता है और निन्दा का जल छिड़ककर कुछ शांति अनुभव करता है। ऐसा निन्दक बड़ा दयनीय होता है। अपनी अक्षमता से पीड़ित वह बेचारा दूसरे की सक्षमता के चाँद को देखकर सारी रात श्वान जैसा भौंकता है। ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा करनेवाले को कोई दंड देने की जरूरत नहीं है। वह निन्दक बेचारा स्वयं दण्डित होता है। आप चैन से सोइए और वह जलन के कारण सो नहीं पाता। उसे और क्या दंड चाहिए? निरन्तर अच्छे काम करते जाने से उसका दंड भी सख्त होता जाता है। जैसे एक कवि ने एक अच्छी कविता लिखी, ईर्ष्याग्रस्त निन्दक को कष्ट होगा। अब अगर एक और अच्छी लिख दी तो उसका कष्ट दुगना हो जायेगा।

निन्दा का उद्‌गम ही हीनता और कमजोरी से होता है। मनुष्य अपनी हीनता से दबता है। वह दूसरों की निन्दा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। उसके अहं की इससे तुष्टि होती है। बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बड़ी बनती है। ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है, त्यों-त्यों निन्दा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। कठिन कर्म ही ईर्ष्या-द्वेष और उनसे उत्पन्न निन्दा को मारता है। इन्द्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है, क्योंकि वह निठल्ला है। स्वर्ग में देवताओं को

बिना उगाया अन्न, बे बनाया महल और बिन बोये फल मिलते हैं। अकर्मण्यता में उन्हें अप्रतिष्ठित होने का भय बना रहता है, इसलिए कर्मी मनुष्यों से उन्हें ईर्ष्या होती है।

निन्दा कुछ लोगों की पूँजी होती है। बड़ा लंबा-चौडा व्यापार फैलाते हैं वे इस पूँजी से। कई लोगों की प्रतिष्ठा ही दूसरों की कलंक-कथाओं के पारायण पर आधारित होती है। बड़े रस-विभोर होकर वे जिस-तिस की सत्य कल्पित कलंक-कथा सुनाते हैं और स्वयं को पूर्ण संत समझने की तुष्टि का अनुभव करते हैं।

आप इनके पास बैठिए और सुन लीजिए, ''बड़ा खराब जमाना आ गया। तुमने सुना? फलाँ और अमुक...।'' अपने चरित्र पर आँख डालकर देखने की उन्हें फुरसत नहीं होती। एक कहानी याद आ रही है। एक स्त्री किसी सहेली के पति की निन्दा अपने पति से कर रही है। वह बड़ा उचक्का, दगाबाज आदमी है। बेईमानी से पैसा कमाता है। कहती है कि मैं उस सहेली की जगह होती तो ऐसे पति को त्याग देती। तब उसका पति उसके सामने यह रहस्य खोलता है कि वह स्वयं बेईमानी से इतना पैसा कमाता है। सुनकर स्त्री स्तब्ध रह जाती है। क्या उसने पति को त्याग दिया? जी हाँ, वह दूसरे कमरे में चली गयी।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हममें जो करने की क्षमता नहीं है, वह यदि कोई करता है तो हमारे पिलपिले अहं को धक्का लगता है, हममें हीनता और ग्लानि आती है। तब हम उसकी निन्दा करके उससे अपने को अच्छा समझकर तुष्ट होते हैं।

उस मित्र की मुलाकात के करीब दस-बारह घंटे बाद यह सब मन में आ रहा है। अब कुछ तटस्थ हो गया हूँ। सुबह जब उसके साथ बैठा था तब मैं स्वयं निन्दा के 'काला सागर' में डूबता-उतराता था, कल्लोल कर रहा था। बड़ा रस है न निन्दा में। सूरदास ने इसलिए 'निन्दा सबद रसाल' कहा है।

कठिन शब्दार्थ :

निमग्न = लीन; साइक्लोन = तेज और धूल भरी चक्कर काटती हुई आँधी; उद्‌गम = प्रारम्भ; निकृष्ट = नीच; मिशनरी = लगन, तत्परता एवं नैपुण्य से कार्य करने की भावना की ओर संकेत; बहुजन हिताय =

अधिकाधिक व्यक्तियों की भलाई के लिए; धृतराष्ट्र की जकड़ = जन्मांध धृतराष्ट्र की भुजाओं में बड़ी शक्ति थी; नागफनी = कँटीला पौधा, एक विशेष प्रकार का कैक्टस; धराशायी करना = पराजित करना, जमीन पर लिटाना; ट्रेड यूनियन = श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष करने वाला श्रमिक संगठन।

मुहावरे :

गले लगाना = आलिंगन करना; बेईमानी करना = धोखा देना; कल्लोल करना = शोर मचाना।

I) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) धृतराष्ट्र की भुजाओं में कौनसा पुतला जकड़ गया था?
२) पिछली रात 'क' 'ग' के साथ बैठकर क्या करता रहा?
३) कुछ लोग आदतन क्या बोलते हैं?
४) लेखक के मित्र के पास दोषों का क्या है?
५) लेखक के मन में किसके प्रति मैल नहीं रहा?
६) निन्दकों की जैसी एकाग्रता किनमें दुर्लभ है?
७) मिशनरी निन्दक चौबीसों घंटे निन्दा करने में किस भाव से लगे रहते हैं?
८) निन्दा, निन्दा करनेवालों के लिए क्या होती है?
९) निन्दा का उद्‍गम किससे होता है?
१०) कौन बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है?

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) धृतराष्ट्र का उल्लेख लेखक ने क्यों किया है?
२) निन्दा की महिमा का वर्णन कीजिए।
३) 'मिशनरी' निन्दक से लेखक का क्या तात्पर्य है?
४) निन्दकों के संघ के बारे में लिखिए।
५) ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दकों की कैसी दशा होती है?
६) निन्दा को पूँजी बनानेवालों के बारे में लेखक ने क्या कहा है?
७) 'निन्दा रस' निबंध का आशय अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

III) ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए :

१) आ बेटा, तुझे कलेजे से लगा लूँ।
२) अभी सुबह की गाड़ी से उतरा और एकदम तुमसे मिलने चला आया।
३) कुछ लोग बड़े निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं।
४) निन्दा का उद्‌गम ही हीनता और कमजोरी से होता है।
५) ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है त्यों-त्यों निन्दा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है।

IV) कोष्ठक में दिए गये उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए :

(ईर्ष्या-द्वेष, भेद-नाशक, पूँजी, पुतला, तूफान)

१) सुबह चाय पीकर अखबार देख रहा था कि वे .... की तरह कमरे में घुसे।
२) छल का धृतराष्ट्र जब आलिंगन करे, तो ..... ही आगे बढ़ाना चाहिए।
३) निन्दा का ऐसा ही .... अँधेरा होता है।
४) .... से प्रेरित निन्दा भी होती है।
५) निन्दा कुछ लोगों की .... होती है।

V) वाक्य शुद्ध कीजिए :

१) ऐसी मौके पर हम अक्सर अपने पुतले को अंकवार में दे देते हैं।
२) पर वह मेरी दोस्त अभिनय में पूरा है।
३) निन्दा का ऐसी ही महिमा है।
४) आपके बारे में मुझसे कोई भी बुरी नहीं कहता।
५) सूरदास ने इसलिए ‘निन्दा सबद रसाल’ कही है।

VI) अन्य लिंग रूप लिखिए :

मजदूर, बेटा, पति, स्त्री।

VII) अन्य वचन रूप लिखिए :

भुजा, कथा, दुश्मन, घंटा, कमरा, कविता, लकीर।

VIII) योग्यता विस्तार :

हरिशंकर परसाई के अन्य व्यंग्य रचनाओं को पढ़िए।

* * * * * *

४. बिन्दा

– महादेवी वर्मा

लेखिका परिचय :

आधुनिक युग की मीरा एवं हिन्दी साहित्य की प्रमुख छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा का जन्म १९०७ ई. में फर्रुखाबाद में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में हुई। आपने प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। आप विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन द्वारा मानद डाक्टरेट की उपाधि से अलंकृत हुईं।

महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व सौम्य और प्रभावशाली रहा। आपकी गंभीर भावुकता और प्रखर बौद्धिकता को देखकर चकित रह जाना पड़ता है। आपके संस्मरण एवं रेखाचित्रों में रचनात्मक गद्य का वैभव प्रकट होता है जो 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी', 'क्षणदा' तथा 'मेरा परिवार' में संग्रहीत हैं। आपको १९८३ ई. में काव्य संग्रह 'यामा' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रस्तुत रेखाचित्र 'बिन्दा' को 'अतीत के चलचित्र' से लिया गया है। यह एक हृदयस्पर्शी रेखाचित्र है जो संस्मरण शैली में है। बिन्दा लेखिका के बचपन की सहेली है। वह अपनी सौतेली माँ द्वारा सतायी गयी, खिलने से पहले ही मुरझा जाने वाली असहाय, निरीह बालिका महादेवी वर्मा के स्मृति पटल पर जीवित है।

'बिन्दा' के माध्यम से मातृप्रेम से वंचित व सौतेली माँ के क्रूर व्यवहार को दर्शाने के उद्देश्य से इस रेखाचित्र का चयन किया गया है।

सभीत-सी आँखोंवाली उस दुर्बल, छोटी और अपने-आप ही सिमटी-सी बालिका पर दृष्टि डाल कर मैंने सामने बैठे सज्जन को, उनका भरा हुआ प्रवेशपत्र लौटाते हुए कहा – 'आपने आयु ठीक नहीं भरी है। ठीक कर दीजिए, नहीं तो पीछे कठिनाई पड़ेगी।' 'नहीं, यह तो गत आषाढ़ में चौदह की हो चुकी' सुनकर मैंने कुछ विस्मित भाव से अपनी उस भावी विद्यार्थिनी को अच्छी तरह देखा, जो नौ वर्षीय बालिका की सरल चंचलता से शून्य थी और चौदह वर्षीय किशोरी के सलज्ज उत्साह से अपरिचित।

उसकी माता के सम्बन्ध में मेरी जिज्ञासा स्वगत न रहकर स्पष्ट प्रश्न ही बन गयी होगी, क्योंकि दूसरी ओर से कुछ कुंठित उत्तर मिला – 'मेरी दूसरी पत्नी है, और आप तो जानती ही होंगी...' और उनके वाक्य को अधसुना ही छोड़कर मेरा मन स्मृतियों की चित्रशाला में दो युगों से अधिक समय की धूल के नीचे दबे बिन्दा या विन्ध्येश्वरी के धुँधले चित्र पर उँगली रखकर कहने लगा – ज्ञात है, अवश्य ज्ञात है।

बिन्दा मेरी उस समय की बाल्यसखी थी, जब मैंने जीवन और मृत्यु का अमिट अन्तर जान नहीं पाया था। अपने नाना और दादी के स्वर्ग-गमन की चर्चा सुनकर मैं बहुत गम्भीर मुख और आश्वस्त भाव से घर भर को सूचना दे चुकी थी कि जब मेरा सिर कपड़े रखने की आल्मारी को छूने लगेगा, तब मैं निश्चय ही एक बार उनको देखने जाऊँगी। न मेरे इस पुण्य संकल्प का विरोध करने की किसी को इच्छा हुई और न मैंने एक बार मरकर कभी न लौट सकने का नियम जाना। ऐसी दशा में, छोटे-छोटे असमर्थ बच्चों को छोड़कर मर जाने वाली माँ की कल्पना मेरी बुद्धि में कहाँ ठहरती। मेरा संसार का अनुभव भी बहुत संक्षिप्त-सा था। अज्ञानावस्था से मेरा साथ देनेवाली सफेद कुत्ती-सीढ़ियों के नीचे वाली अँधेरी कोठरी में आँख मूँदे पड़े रहनेवाले बच्चों की इतनी सतर्क पहरेदार हो उठती थी कि उसका गुर्राना मेरी सारी ममता-भरी मैत्री पर पानी फेर देता था। भूरी पूसी भी अपने चूहे जैसे नि:सहाय बच्चों को तीखे पैने दाँतों में ऐसी कोमलता से दबाकर कभी लाती, कभी ले जाती थी कि उनके कहीं एक दाँत भी न चुभ पाता था। ऊपर की छत के कोने पर कबूतरों का और बड़ी तस्वीर के पीछे गौरैया का जो घोंसला था, उसमें खुली हुई छोटी-छोटी चोंचों और उनमें सावधानी से भरे जाते दानों और कीड़े-मकोड़ों को भी मैं

अनेक बार देख चुकी थी। बछिया को हटाते हुए ही रँभा-रँभा कर घर भर को यह दु:खद समाचार सुनाने वाली अपनी श्यामा गाय की व्याकुलता भी मुझसे छिपी न थी। एक बच्चे कन्धे से चिपकाये और एक की उँगली पकड़े हुए जो भिखारिन द्वार-द्वार फिरती थी, वह भी तो बच्चों के लिए ही कुछ माँगती रहती थी। अत: मैंने निश्चित रूप से समझ लिया था कि संसार का सारा कारबार बच्चों को खिलाने-पिलाने, सुलाने आदि के लिए ही हो रहा है और इस महत्वपूर्ण कर्तव्य में भूल न होने देने का काम माँ नामधारी जीवों को सौंपा गया है।

और बिन्दा के भी तो माँ थी जिन्हें हम पंडिताइन चाची और बिन्दा नयी अम्मा कहती थी। वे अपनी गोरी, मोटी देह को रंगीन साड़ी से सजे-कसे, चारपाई पर बैठ कर फूले गाल और चिपटी-सी नाक के दोनों ओर नीले काँच के बटन सी चमकती हुई आँखों से युक्त मोहन को तेल मलती रहती थी। उनकी विशेष कारीगरी से सँवारी पाटियों के बीच में लाल स्याही की मोटी लकीर-सा सिन्दूर उनींदी सी आँखों में काले डोरे के समान लगने वाला काजल, चमकीले कर्णफूल, गले की माला, नगदार रंग-बिरंगी चूडियाँ और घुँघरूदार बिछुए मुझे बहुत भाते थे, क्योंकि यह सब अलंकार उन्हें गुड़िया की समानता दे देते थे।

यह सब तो ठीक था; पर उनका व्यवहार विचित्र-सा जान पड़ता था। सर्दी के दिनों में जब हमें धूप निकलने पर जगाया जाता था, गर्म पानी से हाथ मुँह धुलाकर मोजे, जूते और ऊनी कपड़ों से सजाया जाता था और मना-मनाकर गुनगुना दूध पिलाया जाता था, तब पड़ोस के घर में पंडिताइन चाची का स्वर उच्च-से-उच्चतर होता रहता था। यदि उस गर्जन-तर्जन का कोई अर्थ समझ में न आता, तो मैं उसे श्यामा के रँभाने के समान स्नेह का प्रदर्शन भी समझ सकती थी; परन्तु उसकी शब्दावली परिचित होने के कारण ही कुछ उलझन पैदा करने वाली थी। 'उठती है या आऊँ', 'बैल के-से दीदे क्या निकाल रही है', 'मोहन का दूध कब गर्म होगा', 'अभागी मरती भी नहीं', आदि वाक्यों में जो कठोरता की धारा बहती रहती थी, उसे मेरा अबोध मन भी जान ही लेता था।

कभी-कभी जब मैं ऊपर की छत पर जाकर उस घर की कथा समझने का प्रयास करती, तब मुझे मैली धोती लपेटे हुए बिन्दा ही आँगन से चौके तक फिरकनी-सी नाचती दिखाई देती। उसका कभी झाड़ू देना,

कभी आग जलाना, कभी आँगन के नल से कलसी में पानी लाना, कभी नयी अम्मा को दूध का कटोरा देने जाना, मुझे बाजीगर के तमाशा जैसे लगता था; क्योंकि मेरे लिए तो वे सब कार्य असम्भव-से थे। पर जब उस विस्मित कर देने वाले कौतुक की उपेक्षा कर पंडिताइन चाची का कठोर स्वर गूँजने लगता, जिसमें कभी-कभी पंडित जी की घुड़की का पुट भी रहता था, तब न जाने किस दुःख की छाया मुझे घेरने लगती थी। जिसकी सुशीलता का उदाहरण देकर मेरे नटखटपन को रोका जाता था, वही बिन्दा घर में चुपके-चुपके कौन-सा नटखटपन करती रहती है, इसे बहुत प्रयत्न करके भी मैं न समझ पाती थी। मैं एक भी काम नहीं करती थी और रात-दिन ऊधम मचाती रहती; पर मुझे तो माँ ने न मर जाने की आज्ञा दी और न आँखे निकाल लेने का भय दिखाया। एक बार मैंने पूछा भी – 'क्या पंडिताइन चाची तुम्हारी तरह नहीं है?' माँ ने मेरी बात का अर्थ कितना समझा यह तो पता नहीं, उनके संक्षिप्त 'हैं' से न बिन्दा की समस्या का समाधान हो सका और न मेरी उलझन सुलझ पायी।

बिन्दा मुझसे कुछ बड़ी ही रही होगी; परन्तु उसका नाटापन देखकर ऐसा लगता था, मानों किसी ने ऊपर से दबाकर उसे कुछ छोटा कर दिया हो। दो पैसों में आने वाली खँजड़ी के ऊपर चढ़ी हुई झिल्ली के समान पतले चर्म से मढ़े और भीतर की हरी-हरी नसों की झलक देने वाले उसके दुबले हाथ-पैर न जाने किस अज्ञात भय से अवसन्न रहते थे। कहीं से कुछ आहट होते ही उसका विचित्र रूप से चौंक पड़ना और पंडिताइन चाची का स्वर कान में पड़ते ही उसके सारे शरीर का थरथरा उठना, मेरे विस्मय को बढ़ा ही नहीं देता था, प्रत्युत् उसे भय में बदल देता था। और बिन्दा की आँखें तो मुझे पिंजड़ें में बन्द चिड़िया की याद दिलाती थीं।

एक बार जब दो-तीन करके तारे गिनते-गिनते उसने एक चमकीले तारे की ओर उँगली उठाकर कहा – 'वह रही मेरी अम्मा' तब तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। क्या सबकी एक अम्मा तारों में होती है और एक घर में? पूछने पर बिन्दा ने अपने ज्ञान-कोष में से कुछ कण मुझे दिये और तब मैंने समझा कि जिस अम्मा को ईश्वर बुला लेता है, वह तारा बनकर ऊपर से बच्चों को देखती रहती है और जो बहुत सजधज से घर में आती है, वह बिन्दा की नयी अम्मा जैसी होती है। मेरी बुद्धि सहज ही पराजय स्वीकार करना नहीं जानती, इसी से मैंने सोचकर कहा – 'तुम

नयी अम्मा को पुरानी अम्मा क्यों नहीं कहती, फिर वे न नयी रहेंगी और न डाँटेंगी।'

बिन्दा को मेरा उपाय कुछ जँचा नहीं, क्योंकि वह तो अपनी पुरानी अम्मा को खुली पालकी में लेटकर जाते और नयी को बन्द पालकी में बैठकर आते देख चुकी थी, अत: किसी को भी पदच्युत करना उसके लिए कठिन था।

पर उसकी कथा से मेरा मन तो सचमुच आकुल हो उठा, अत: उसी रात को मैंने माँ से बहुत अनुनय पूर्वक कहा – 'तुम कभी तारा न बनना, चाहे भगवान कितना ही चमकीला तारा बनावें।' माँ बेचारी मेरी विचित्र मुद्रा पर विस्मित होकर कुछ बोल भी न पायी थी कि मैंने अवकुंठित भाव से अपना आशय प्रकट कर दिया – 'नहीं तो पंडिताइन चाची जैसी नयी अम्मा पालकी में बैठकर आ जायेगी और फिर मेरा दूध, बिस्कुट, जलेबी सब बन्द हो जायेगी और मुझे बिन्दा बनना पड़ेगा।' माँ का उत्तर तो मुझे स्मरण नहीं, पर इतना याद है कि उस रात उसकी धोती का छोर मुट्ठी में दबाकर ही मैं सो पायी थी।

बिन्दा के अपराध तो मेरे लिए अज्ञात थे; पर पंडिताइन चाची के न्यायालय से मिलने वाले दण्ड के सब रूपों से मैं परिचित हो चुकी थी। गर्मी की दोपहर में मैंने बिन्दा को आँगन की जलती धरती पर बार-बार पैर उठाते और रखते हुए घंटों खड़े देखा था, चौके के खम्भे से दिन-दिन भर बँधा पाया था और भूख से मुरझाये मुख के साथ पहरों नयी अम्मा और खटोले में सोते मोहन पर पँखा झलते देखा था। उसे अपराध का ही नहीं, अपराध के अभाव का भी दण्ड सहना पड़ता था, इसी से पंडित जी की थाली में पंडिताइन चाची का ही काला मोटा और घुँघराला बाल निकलने पर भी दण्ड बिन्दा को मिला। उसके छोटे-छोटे हाथों से धुल न सकने वाले, उलझे, तेलहीन बाल भी अपने स्वाभाविक भूरेपन और कोमलता के कारण मुझे बड़े अच्छे लगते थे। जब पंडिताइन चाची की कैंची ने उन्हें कूड़े के ढेर पर, बिखरा कर उनके स्थान को बिल्ली की काली धारियों जैसी रेखाओं से भर दिया, तो मुझे रूलाई आने लगी; पर बिन्दा ऐसे बैठी रही, मानों सिर और बाल दोनों नयी अम्मा के ही हों।

और एक दिन याद आता है। चूल्हे पर चढ़ाया दूध उफना जा रहा था। बिन्दा ने नन्हें-नन्हें हाथों से दूध की पतीली उतारी अवश्य; पर

वह उसकी उँगलियों से छूट कर गिर पड़ी। खौलते दूध से जले पैरों के साथ दरवाजे पर खड़ी बिन्दा का रोना देख मैं तो हतबुद्धि सी हो रही। पंडिताइन चाची से कह कर वह दवा क्यों नहीं लगवा लेती, यह समझना मेरे लिए कठिन था। उस पर जब बिन्दा मेरा हाथ अपने जोर से धड़कते हुए हृदय से लगाकर कहीं छिपा देने की आवश्यकता बताने लगी, तब तो मेरे लिए सब कुछ रहस्यमय हो उठा।

उसे मैं अपने घर में खींच लाई अवश्य; पर न ऊपर के खण्ड में माँ के पास ले जा सकी और न छिपाने का स्थान खोज सकी। इतने में दीवारें लाँघ कर आने वाले, पंडिताइन चाची के उग्र स्वर ने भय से हमारी दिशाएँ रूँध दीं, इसी से हड़बड़ाहट में हम दोनों उस कोठरी में जा घुसीं, जिसमें गाय के लिए घास भरी जाती थी। मुझे तो घास की पत्तियाँ भी चुभ रही थीं, कोठरी का अंधकार भी कष्ट दे रहा था; पर बिन्दा अपने जले पैरों को घास में छिपाये और दोनों ठंडे हाथों से मेरा हाथ दबाये ऐसे बैठी थी, मानों घास का चुभता हुआ ढेर रेशमी बिछौना बन गया हो।

मैं तो शायद सो गई थी; क्योंकि जब घास निकालने के लिए आया हुआ गोपी इस अभूतपूर्व दृश्य की घोषणा करने के लिए कोलाहल मचाने लगा, तब मैंने आँखें मलते हुए पूछा 'क्या सबेरा हो गया?'

माँ ने बिन्दा के पैरों पर तिल का तेल और चूने का पानी लगाकर जब अपने विशेष सन्देशवाहक के साथ उसे घर भिजवा दिया, तब उसकी क्या दशा हुई, यह बताना कठिन है; पर इतना तो मैं जानती हूँ कि पंडिताइन चाची के न्यायविधान में न क्षमा का स्थान था, न अपील का अधिकार।

फिर कुछ दिनों तक मैंने बिन्दा को घर-आँगन में काम करते नहीं देखा। उसके घर जाने से माँ ने मुझे रोक दिया था; पर वे प्राय: कुछ अंगूर और सेब लेकर वहाँ हो आती थीं। बहुत खुशामद करने पर रुकिया ने बताया कि उस घर में महारानी आई हैं। 'क्या वे मुझसे नहीं मिल सकतीं' पूछने पर वह मुँह में कपड़ा ठूँस कर हँसी रोकने लगी। जब मेरे मन का कोई समाधान न हो सका, तब मैं एक दिन दोपहर को सबकी आँख बचाकर बिन्दा के घर पहुँची। नीचे के सुनसान खण्ड में बिन्दा अकेली एक खाट पर पड़ी थी। आँखें गड्ढे में धँस गयी थीं, मुख दानों से भर कर न जाने कैसा हो गया था और मैली-सी चादर के नीचे छिपा शरीर बिछौने से

भिन्न ही नहीं जान पड़ता था। डाक्टर, दवा की शीशियाँ, सिर पर हाथ फेरती हुई माँ और बिछौने के चारों चक्कर काटते हुए बाबूजी के बिना भी बीमारी का अस्तित्व है, यह मैं नहीं जानती थी, इसी से उस अकेली बिन्दा के पास खड़ी होकर मैं चकित-सी चारों ओर देखती रह गयी। बिन्दा ने ही कुछ संकेत और कुछ अस्पष्ट शब्दों में बताया कि नयी अम्मा मोहन के साथ ऊपर के खण्ड में रहती हैं, शायद चेचक के डर से। सबेरे-शाम बरौनी आकर उसका काम कर जाती है।

फिर तो बिन्दा को देखना सम्भव न हो सका; क्योंकि मेरे इस आज्ञा-उल्लंघन से माँ बहुत चिन्तित हो उठी थीं।

एक दिन सबेरे ही रुकिया ने उनसे न जाने क्या कहा कि वे रामायण बन्द कर बार-बार आँखें पोंछती हुई बिन्दा के घर चल दीं। जाते-जाते वे मुझे बाहर न निकलने का आदेश देना नहीं भूली थीं, इसी से इधर-उधर से झाँककर देखना आवश्यक हो गया। रुकिया मेरे लिए त्रिकालदर्शी से कम न थी; परन्तु वह विशेष अनुनय-विनय के बिना कुछ बताती ही नहीं थी और उससे अनुनय-विनय करना मेरे आत्म-सम्मान के विरुद्ध पड़ता था। अत: खिड़की से झाँककर मैं बिन्दा के दरवाजे पर जमा हुए आदमियों के अतिरिक्त और कुछ न देख सकी और इस प्रकार की भीड़ से विवाह और बारात का जो सम्बन्ध है, उसे मैं जानती थी। तब क्या उस घर में विवाह हो रहा है, और हो रहा है तो किसका? आदि प्रश्न मेरी बुद्धि की परीक्षा लेने लगे। पंडित जी का विवाह तो तब होगा, जब दूसरी पंडिताइन चाची भी मर कर तारा बन जायेंगी और बैठ न सकने वाले मोहन का विवाह सम्भव नहीं, यही सोच-विचार कर मैं इस परिणाम तक पहुँची कि बिन्दा का विवाह हो रहा है और उसने मुझे बुलाया तक नहीं। इस अचिन्त्य अपमान से आहत मेरा मन सब गुड़ियों को साक्षी बनाकर बिन्दा को किसी भी शुभ कार्य में न बुलाने की प्रतिज्ञा करने लगा।

कई दिन तक बिन्दा के घर झाँक-झाँककर जब मैंने माँ से उसके ससुराल से लौटने के सम्बन्ध में प्रश्न किया, तब पता चला कि वह तो अपनी आकाश-वासिनी अम्मा के पास चली गयी। उस दिन से मैं प्राय: चमकीले तारे के आस-पास फैले छोटे तारों में बिन्दा को ढूँढ़ती रहती; पर इतनी दूर से पहचानना क्या सम्भव था?

तब से कितना समय बीत चुका है, पर बिन्दा और उसकी नयी अम्मा की कहानी शेष नहीं हुई। कभी हो सकेगी या नहीं, इसे कौन बता सकता है?

कठिन शब्दार्थ :

सलज्ज = लाज से; बिछुए = पाँव की उँगलियों का एक गहना; फिरकनी = फिरकी/चकरी नामक खिलौना; खँजड़ी = खँजरी, छोटी डफली; अवसन्न = खिन्न, उदास; पदच्युत = पद से हटाना; चेचक = शीतला नामक रोग (small pox)।

I) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) महादेवी वर्मा की बाल्य सखी का नाम लिखिए।
२) महादेवी वर्मा को किसका अनुभव बहुत संक्षिप्त था?
३) पंडिताइन चाची के अलंकार उन्हें किसकी समानता दे देते थे?
४) बिन्दा का काम लेखिका को किसके तमाशे जैसा लगता था?
५) बिन्दा की आँखें लेखिका को किसकी याद दिलाती थीं?
६) बिन्दा ने तारे गिनते-गिनते एक चमकीले तारे की ओर उँगली उठाकर क्या कहा?
७) महादेवी वर्मा ने रात को अपनी माँ से बहुत अनुनय पूर्वक क्या कहा?
८) महादेवी वर्मा किसके न्यायालय से मिलने वाले दण्ड से परिचित हो चुकी थीं?
९) महादेवी वर्मा को किसकी पत्तियाँ चुभ रही थीं?
१०) किसने बिन्दा के पैरों पर तिल का तेल लगाया?
११) महादेवी वर्मा के लिए कौन त्रिकालदर्शी से कम न थी?

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) महादेवी वर्मा को बिन्दा की याद क्यों आ गई?
२) महादेवी वर्मा को पंडिताइन चाची का कौन-सा रूप आकर्षित करता था?

३) महादेवी वर्मा के कभी-कभी छत पर जाकर देखने पर बिन्दा क्या-क्या करते दिखाई देती थी?

४) बिन्दा अपनी नयी अम्मा से किस प्रकार डरती थी?

५) महादेवी वर्मा ने दोपहर के समय सबकी आँख बचाकर बिन्दा के घर पहुँचने पर क्या देखा?

६) बिन्दा के घर के सामने भीड़ देखकर लेखिका के मन में क्या विचार आने लगे?

III) निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे ?

१) 'क्या पंडिताइन चाची तुम्हारी तरह नहीं है?'

२) 'वह रही मेरी अम्मा।'

३) 'तुम कभी तारा न बनना, चाहे भगवान कितना ही चमकीला तारा बनावें।'

IV) ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए :

१) 'उठती है या आऊँ', 'बैल के-से दीदे क्या निकाल रही है', 'मोहन का दूध कब गर्म होगा', 'अभागी मरती भी नहीं आदि।

२) 'तुम नयी अम्मा को पुरानी अम्मा क्यों नहीं कहती, फिर वे न नयी रहेंगी और न डाँटेंगी।'

३) ... पंडिताइन चाची के न्यायविधान में न क्षमा का स्थान था, न अपील का अधिकार।

V) कोष्ठक में दिए गए कारक चिन्हों से रिक्त स्थान भरिए :

(को, की, पर, से)

१) बिन्दा .... समस्या का समाधान न हो सका।

२) बिन्दा .... मेरा उपाय कुछ जँचा नहीं।

३) उसके घर जाने .... माँ ने मुझे रोक दिया था।

४) चूल्हे ...... चढ़ाया दूध उफना जा रहा था।

VI) अन्य लिंग रूप लिखिए :
भिखारिन, पंडिताइन, लेखिका, बैल, चाची, नाना, दादी, विद्यार्थिनी, बालिका।

VII) अन्य वचन रूप लिखिए :
बच्चा, कोठरी, सीढ़ी, मुद्रा, पंखा, दरवाजे, उँगली।

VIII) विलोम शब्द लिखिए :
दुर्बल, स्पष्ट, ज्ञात, मृत्यु, स्वर्ग, पुण्य, सुन्दर, न्याय, पराजय, स्वाभाविक, ऊपर।

IX) योग्यता विस्तार :
महादेवी वर्मा के अन्य रेखाचित्रों को पढ़कर जानकारी प्राप्त कीजिए।

* * * * * *

५. बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर

— शान्ति स्वरूप बौद्ध

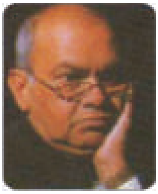

लेखक परिचय :

शांति स्वरूप बौद्ध जी का जन्म २ अक्टूबर १९४९ में फराशखाना, पुरानी दिल्ली में हुआ। आपकी माता भुरियादेवी तथा पिता परिनिब्बुत्त लाल हरिचंद मौर्य थे। आप जन्मजात प्रतिभाशाली होने के साथ ही, बौद्ध धम्म पर भारत वर्ष के लगभग सभी प्रमुख नगरों में 'धम्म प्रवचन' दिया है। आपने विशेष रूप से आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, फ्रान्स आदि देशों की धम्म यात्रा की है। २१ वर्ष के सेवाकाल के पश्चात् आप सरकारी नौकरी को ठुकराकर, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक सुधार की क्रान्ति के लिए समर्पित हैं। आपकी सामाजिक एवं साहित्यिक सेवाओं के लिए अनेक संस्थाओं ने सम्मानित किया है। आपकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं — 'महाबोधी राहुल सांकृत्यायन', 'बोधगया', 'सारनाथ', 'भीम जीवनी', 'अशोक', 'भगवान बुद्ध', 'महात्मा ज्योतिराव फूले' आदि।

प्रस्तुत जीवनी में डॉ.भीमराव अंबेडकर के संघर्षपूर्ण जीवन का सजीव एवं मार्मिक चित्रण है। उन्होंने जीवन की कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए अपनी शिक्षा पूरी की। वंचित एवं पीड़ित समाज को जागरूक करना एवं उनके अधिकारों के प्रति सचेत करना ही उनके जीवन का मूल ध्येय रहा।

अंबेडकर के मूल मंत्र — 'शिक्षा, संगठन एवं संघर्ष' से विद्यार्थियों को भलीभाँति परिचित कराने के उद्देश्य से इस जीवनी को संकलित किया गया है।

महापुरुष राजमहलों में ही नहीं, खेत-खलिहानों में भी जन्म लेते हैं। ऊँची जातियों में ही नहीं, वे कभी-कभी निम्न जाति में भी पैदा होते हैं। इस बात को अच्छी तरह समझने के लिए हमें डॉ. बी.आर. अंबेडकर के जीवन चरित्र पर दृष्टि डालनी होगी। डॉ. बी.आर. अंबेडकर का जन्म १४ अप्रैल १८९१ में रामजी सूबेदार के घर में माता भीमाबाई की कोख से हुआ था। उस समय रामजी सूबेदार 'महू' नामक छावनी में सैनिक के पद पर थे। वे महाराष्ट्र की महार जाति से संबंध रखते थे। महार जाति महाराष्ट्र में अछूत समझी जाती है। इस कारण महारों को सामाजिक अत्याचार और तरह-तरह के बहिष्कार झेलने पड़ते थे।

जन्म के समय डॉ. अंबेडकर का नाम भीमराव रखा गया था। मगर परिवार वाले उन्हें 'भीवा' कहकर पुकारते थे। भीवा को बचपन से ही छूतछात का कटु अनुभव सहन करना पड़ा। उन दिनों अछूतों के लिए मंदिरों, कुँओं की तरह पाठशाला के भी दरवाजे बंद थे। मगर सेना में इन सामाजिक नियमों की कठोरता में कुछ ढील थी। बहुत कठिनाई से ही सही, पर भीवा का सैनिक स्कूल में प्रवेश हो गया।

प्रवेश तो हो गया, मगर सामाजिक भेदभाव और छूतछात ने भीवा का पीछा नहीं छोड़ा। बालक भीवा को अपने बैठने का टाट अपने साथ घर से ही ले जाना पड़ता था। पाठशाला में उन्हें कक्षा के भीतर अन्य विद्यार्थियों के साथ बैठने की मनाही थी। वे अपनी कक्षा के बाहर सब छात्रों के जूतों के बीच दरवाजे के बाहर बैठते थे। सामाजिक अत्याचारों की निर्दयता देखिए – भीमराव को पानी के घड़े को भी छूने की इजाजत नहीं थी। कारण यह था कि अछूतों के छू लेने से घड़े का जल भ्रष्ट हो जाता। चाहे कितनी भी प्यास लगे, बेशक प्यास के मारे प्राण ही क्यों न निकल जाएँ, मगर प्यासा अछूत घड़े से पानी लेकर नहीं पी सकता था। किसी चपरासी की कृपा हो गई, तो पानी मिल जाता, नहीं तो घर आकर ही पानी पीना पड़ता।

रामजी सूबेदार शिक्षा और अनुशासन का महत्त्व भली प्रकार जानते थे। उन्होंने भीमराव को भी इसका महत्त्व अच्छी तरह समझाया। यही कारण है कि सब प्रकार के अत्याचार, अनाचार और भेदभाव सहन करके भी वे शिक्षा प्राप्त करने में जुटे रहे।

भीमराव हाईस्कूल में पहुँचे, तो छूतछात की काली छाया उनके साथ यहाँ भी आ धमकी। गुरुजी ने एक प्रश्न पूछा। किसी ने उत्तर नहीं दिया। भीमराव प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए ज्यों ही ब्लैक बोर्ड की तरफ चले, त्यों ही कक्षा के सवर्ण छात्रों ने शोर मचाते हुए कहा – रोको! इस अछूत को। ब्लैक बोर्ड के नीचे रखा हमारा भोजन इसके छूने से भ्रष्ट हो जाएगा। भीमराव इस प्रकार के असंख्य अपमान के खून के घूँट चुपचाप पी जाते।

सन् १९०७ में भीमराव ने मैट्रिक की परीक्षा पास की। एक अछूत बालक के लिए यह महान उपलब्धि थी। इस अवसर पर भीमराव के सम्मान में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें कृष्णजी अर्जुन केलुस्कर जी ने अपनी लिखी पुस्तक 'बुद्ध जीवनी' भीमराव को भेंट की। इसी समय रामजी सूबेदार ने घोषणा की कि हमारी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, फिर भी मैं भीमराव को उच्च शिक्षा दिलाने का भरसक प्रयास करूँगा।

१७ वर्ष की आयु में भीमराव का विद्यार्थी जीवन में ही ९ वर्ष की रमाबाई के साथ विवाह हो गया। अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भीमराव बंबई के एलफिंस्टन कालेज में दाखिल हो गए। उस समय एक अछूत के लिए यह बहुत अनोखी बात थी। मगर रामजी सूबेदार भीमराव को और पढ़ाने में कठिनाई महसूस करने लगे, तो केलुस्कर गुरुजी भीमराव को बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड जी के पास ले गए। भीमराव ने अपनी विद्वत्ता एवं बुद्धिमत्ता से महाराजा का दिल जीत लिया। महाराजा ने भीमराव की उच्च शिक्षा के लिए रु.२५/- मासिक छात्रवृत्ति स्वीकृत कर दी। समाज की क्रूर जाति-व्यवस्था उन्हें पग-पग पर पीड़ा पहुँचाती रही। वे संस्कृत पढ़ना चाहते थे, मगर अछूत होने के कारण उन्हें संस्कृत भाषा नहीं पढ़ने दी गई। दृढ़ इच्छाशक्ति के धनी भीमराव ने १९१२ में अंग्रेजी और फारसी विषयों के साथ बंबई विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा पास की थी। वे बी.ए. की परीक्षा पास करने वाले पहले महार थे।

सन् १९१३ में अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध भीमराव बड़ौदा स्टेट फोर्स में लैफ्टीनेंट भर्ती हो गए। भीमराव की भर्ती के करीब १५ दिन बाद २ फरवरी १९१३ को उनके पिता रामजी सूबेदार की मृत्यु हो गई।

भीमराव पर परिवार के दायित्व का भार बढ़ गया। मगर उनके मन में और भी ऊँची शिक्षा पाने की ललक बनी हुई थी।

इसी दौरान बड़ौदा रियासत की तरफ से मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजे जाने की योजना के तहत भीमराव का चयन हो गया। अमेरिका में शिक्षा प्राप्त करने के बदले में भीमराव को एक शपथ-पत्र पर हस्ताक्षर करने पड़े जिसके अनुसार शिक्षा प्राप्त करके बड़ौदा रियासत में सेवा करनी थी। जुलाई १९१३ के अंत में भीमराव अंबेडकर न्यूयार्क (अमेरिका) में जाकर कोलम्बिया विश्वविद्यालय में दाखिल हो गए। उस समय एक अछूत युवक का विदेश में जाकर शिक्षा पाना कल्पना से परे की बात थी।

अमेरिका में जाकर भीमराव अंबेडकर को स्वतंत्र एवं खुला माहौल मिला, जहाँ किसी भी प्रकार का जातीय बंधन नहीं था और न ही जाति-आधारित भेदभाव। भीमराव का पढ़ाई में खूब मन लगा। अमेरिका में उदार, प्रेमपूर्ण और समानता के व्यवहार ने उन्हें धनाभाव के कारण भूखा-प्यासा रहकर भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। वे शराब, सिगरेट आदि से दूर रहकर १८ घंटे पढ़ा करते थे। इसी दौरान उनकी नजर कमज़ोर हो गई और उन्हें चश्मा लगाना पड़ा। अमेरिका में उन्होंने राजनीति शास्त्र, नैतिक दर्शनशास्त्र, मानव विज्ञान, समाज विज्ञान, अर्थशास्त्र, आदि विषय पढ़े। सन् १९१५ में उन्होंने एम.ए. तथा १९१६ में पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की। अब वे भीमराव अंबेडकर से डॉ.भीमराव अंबेडकर हो गए।

सन् १९१६ में ही डॉ. अंबेडकर और अधिक शिक्षा पाने के लिए लंडन पहुँचे। लंडन के प्रोफेसरों ने उन्हें डॉक्टरेट ऑफ साइन्स (डी.ए.सी.) की तैयारी करने की अनुमति दे दी। उन्होंने तुरंत शोधकार्य आरंभ कर दिया।

इसी बीच उन्हें बड़ौदा के दीवान ने एक पत्र लिखा कि छात्रवृत्ति की अवधि खत्म हो चुकी है। अत: तुरंत वापस लौटकर शपथ-पत्र की शर्तों के अनुसार बड़ौदा रियासत की दस वर्ष तक सेवा करो। डॉ. अंबेडकर को अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। भारत रवाना होने से पूर्व उन्होंने विश्वविद्यालय से यह अनुमति ले ली कि अक्टूबर १९२१ तक अधूरी पढ़ाई पूरी की जा सकती है। २१ अगस्त १९१७ को डॉ. अंबेडकर बंबई पहुँचे।

बड़ौदा रियासत की शर्त के अनुसार डॉ. अंबेडकर ने सैन्य सचिव के पद पर कार्य आरंभ किया। मगर इतने उदार महाराजा की बड़ौदा नगरी में संसार के महान विद्वान को छूतछात की दूषित भावना के कारण रहने के लिए कोई मकान नहीं मिला। वे नाम बदलकर एक पारसी धर्मशाला में रहने लगे। मगर पारसियों को जब उनकी जाति का पता चला, तो उन्होंने भी डॉ. अंबेडकर को अपमानित करके खदेड़ दिया। कितना मजबूत रहा होगा डॉ.अंबेडकर का जिगर, जो इतने जुल्म सह कर भी प्रगति पथ पर अग्रसर होते रहे। डॉ. अंबेडकर ने एक जगह लिखा भी है – 'वर्षों का समय बीत जाने पर भी पारसी सराय में मेरे साथ हुए दुर्व्यवहार का स्मरण करते ही मेरी आँखों में आँसू छलक पड़ते हैं।'

अपनी योग्यता के बल पर और जीवन के प्रगति पथ पर तेजी से अग्रसर होने के दृढ़ संकल्प के कारण डॉ. अंबेडकर सन् १९१८ में रु.४५०/- के मासिक वेतन पर सिडनेहम कालेज, मुंबई में प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हुए। यह नौकरी उन्होंने वेतन में से कुछ पैसे बचाकर लंडन जाकर अधूरी पढ़ाई पूरी करने के लिए की थी। सिडनेहम कालेज में भी जातिवादी मानसिकता के सवर्णों ने उन्हें प्रताड़ित करना नहीं छोड़ा।

जातीय आधार पर होने वाले अत्याचार कभी-कभी डॉ. अंबेडकर को यह सोचने के लिए बाध्य कर देते कि इस अन्याय को मिटाने के लिए हमें बंदूक उठा लेनी चाहिए। मगर धन्य हैं डॉ. अंबेडकर उन्होंने तलवार या बंदूक का नहीं अहिंसात्मक तरीके से अपने समाज के कष्टों को दूर करने का निर्णय लिया। अब उन्होंने अपने लिए या अपने बीबी-बच्चों के लिए नहीं, अपितु सदियों से पीड़ित समाज की पीड़ा दूर करने का बीड़ा उठाया।

उन्होंने वंचित एवं पीड़ित समाज को जागरूक करना आरंभ किया। इस दिशा में सर्वप्रथम उन्होंने 'मूकनायक' यानी 'गूंगों का नेता' नामक समाचार पत्र आरंभ किया। इस कार्य में कोल्हापुर के महाराज शाहूजी महाराजा ने भी उनकी सहायता की।

डॉ. अंबेडकर ने प्रोफेसर की नौकरी करते समय जो पैसे कमाए, उनमें कुछ कर्जे के पैसे मिलाकर वे दोबारा अपनी अधूरी पढ़ाई को पूरा करने के लिए सन् १९२० में फिर लंडन चले गए। वहाँ पर संघर्षपूर्ण अध्ययन के बल पर उन्होंने सन् १९२१ में 'ब्रिटिश भारत में साम्राज्य

पूंजी का प्रादेशिक विकेंद्रीकरण' विषय पर शोधकार्य पूरा करके मास्टर ऑफ साइंस की डिग्री प्राप्त की। सन् १९२३ में डॉ. भीमराव अंबेडकर एम.ए., पीएच.डी., एम.एस.सी., डी.एस.सी, और बार-एट-लॉ बनकर बंबई आए।

लंडन से लौटकर उन्होंने बैरिस्टर बनकर वकालत करने का निश्चय किया। इसी के साथ उन्होंने अपनी योग्यता के बल पर समाज कल्याण के कार्य को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' का गठन किया। सन् १९२४ में उन्होंने 'समता सैनिक दल' की स्थापना की।

२४ जनवरी १९२४ को बंबई विधान परिषद में डॉ. अंबेडकर ने बजट भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने बंबई विधान परिषद का सदस्य रहते हुए जन कल्याण के बहुत से कार्य किए। इसी बीच उन्हें पता चला कि महाड़ नामक स्थान पर हिंदुओं के धर्म-स्थानों, कुओं व तालाब पर कुत्ते-बिल्ली, गाय-भैंस व गधे-सूअर तो पानी पी सकते हैं, पर अछूत लोग नहीं। यह तो जातीय भेदभाव की पराकाष्ठा थी।

डॉ. अंबेडकर जानते थे कि स्वतंत्रता व अधिकार भीख में नहीं मिलते, इन्हें पाने के लिए तो सिर कटवाने पड़ते हैं। डॉ. अंबेडकर ने अछूतों को संगठित किया और १९-२० मार्च १९२७ को महाड़ में एक विशाल सभा का आयोजन किया। संसार के मानव इतिहास की यह ऐसी घटना थी, शायद ही कोई विदेशी विश्वास करेगा कि भारत के अछूतों को अपनी जान खतरे में डालकर पानी पीने के लिए संघर्ष करना पड़ा था।

इस संघर्ष में डॉ. अंबेडकर को सफलता मिली और इस घटना की सफलता के साथ डॉ. अंबेडकर अछूतों के ईमानदार नेता के रूप में स्थापित हुए।

भारत की भावी शासन-प्रणाली व संविधान के बारे में रूप-रेखा तय करने के लिए ब्रिटिश सम्राट ने एक गोलमेज सम्मेलन लंडन में आयोजित किया। इस सम्मेलन में ८९ भारतीय प्रतिनिधियों सहित भारत के अछूतों की ओर से डॉ. अंबेडकर ने अपने प्रभावशाली भाषण में कहा, ''वे ब्रिटिश-भारत की जनसंख्या के पाँचवे भाग का, जो कि फ्रांस या इंग्लैंड की आबादी से भी अधिक है, मत व्यक्त कर रहे हैं।'' डॉ. अंबेडकर ने सिंह-गर्जना करते हुए कहा, 'जब हम अपनी वर्तमान स्थिति

और ब्रिटिश-शासन से पहले की स्थिति की तुलना करते हैं, तो हम पाते हैं कि, हम उन्नति करने की बजाय व्यर्थ में अपना समय बर्बाद कर रहे हैं।'

डॉ. अंबेडकर गोलमेज सम्मेलन में डटकर लड़े, निर्भयता से गरजे और अछूतों के पृथक निर्वाचन का अधिकार पाने में सफल हुए।

गांधी जी सहित हिन्दू नेताओं ने लिखित में 'पूनापैक्ट' नाम का एक समझौता किया, जिसके तहत अछूतों की प्रगति के लिए नौकरियों में और शिक्षा के क्षेत्र में आरक्षण की व्यवस्था की गई।

२७ मई १९३५ को उनकी पत्नी रमाबाई का देहांत हो गया। उन्होंने बहुत दु:ख माना और भगवा वस्त्र पहनकर संन्यास लेने का निर्णय कर लिया। मगर परिवार के बड़ों और मित्रों के समझाने-बुझाने पर उन्होंने भगवा वस्त्र त्यागकर समाज-कल्याण के लिए संघर्ष की राह पकड़ने का निर्णय लिया। इस समय भगवा वस्त्र धारण करने के कारण लोगों ने उन्हें 'बाबासाहेब' कहना आरंभ कर दिया।

बाबासाहेब गजब के पुस्तक प्रेमी थे। पुस्तकों को वे अपनी पत्नी और बच्चों से अधिक मानते थे। उनका पुस्तकालय किसी के भी व्यक्तिगत पुस्तकालय से बहुत विशाल था।

बाबासाहेब की विद्वत्ता और योग्यता से प्रभावित होकर भारत के गवर्नर ने उन्हें सन् १९४२ में अपने मंत्रिमंडल में श्रममंत्री का पद सौंपा। जब भारतवर्ष के स्वतंत्र होने की बात आई, तो अंग्रेजों ने यह सुनिश्चित करना चाहा कि हमारी शासन-व्यवस्था किस और कैसे संविधान के आधीन चलेगी। देश में संविधान बनाने वाला उनसे योग्य कोई था नहीं, अत: भारत के संविधान निर्माण के लिए उन्हें मसौदा समिति का अध्यक्ष चुना गया। उन्हीं के द्वारा हमारा संविधान लिखा गया।

संविधान पूरा होने पर भारत के प्रथम राष्टपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था – 'डॉ. अंबेडकर को संविधान मसौदा समिति का अध्यक्ष बनाने से अधिक अच्छा कार्य हम नहीं कर पाए।' बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर को भारतीय संविधान का जनक माना जाता है। स्वतंत्र भारत में उन्हें नेहरू मंत्रिमंडल में कानून मंत्री बनाया गया। कानून मंत्री के रूप में उन्होंने अनेक अनूठे कार्य किए।

१४ अक्तूबर १९५६ को उन्होंने अपने पाँच लाख अनुयायियों के साथ भंते चंद्रमणि महाथेरो के हाथों बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। वे बौद्ध

बन गये। ६ दिसंबर १९५६ को बाबासाहेब का परिनिर्वाण हुआ।

दलितों के मसीहा एवं भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर को मरणोपरांत ''भारत रत्न'' के सर्वोच्च सम्मान से विभूषित किये जाने पर देश में सर्वत्र हर्ष और संतोष प्रकट किया गया।

कठिन शब्दार्थ :

निर्दयता = निष्ठुरता, कठोर; पराकाष्ठा = चरमसीमा; दमन = दबाने की क्रिया; छूतछात = अस्पृश्यता।

I) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) डॉ. बी.आर. अंबेडकर का जन्म कब हुआ?
२) अंबेडकर की माता का नाम क्या था?
३) रामजी सूबेदार किस गाँव में सैनिक थे?
४) भीमराव ने मैट्रिक परीक्षा कब पास की?
५) कृष्णजी अर्जुन केलुस्कर ने कौन-सी पुस्तक भीमराव को भेंट दी?
६) भीमराव का विवाह किसके साथ हुआ?
७) महाराजा की ओर से भीमराव को मासिक छात्रवृत्ति कितनी मिलती थी?
८) अंबेडकर जी ने बी.ए. की परीक्षा कब पास की?
९) भीमराव जी १९१३ में अमेरिका के किस विश्वविद्यालय में दाखिल हो गए?
१०) डॉ. अंबेडकर ने किस समाज को जागरूक करना आरंभ किया?
११) 'मूक नायक' पत्रिका के संपादक कौन थे?
१२) डॉ. अंबेडकर पत्नी और बच्चों से भी अधिक किसे मानते थे?

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) अंबेडकर जी के बाल्य जीवन का परिचय दीजिए।
२) अंबेडकर जी को शिक्षा प्राप्त करते समय किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा?

३) लंडन के गोलमेज सम्मेलन में अंबेडकर जी ने किन विषयों पर प्रकाश डाला?

४) पत्नी की मृत्यु का डॉ.अंबेडकर पर क्या प्रभाव पड़ा?

III) कोष्ठक में दिए गए कारक चिन्हों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

(के, का, में, के लिए, से)

१) जन्म के समय डॉ. अंबेडकर .... नाम भीमराव रखा गया था।

२) उस समय एक अछूत .... यह बहुत अनोखी बात थी।

३) इसी बीच उन्हें बड़ौदा .... दीवान ने एक पत्र लिखा।

४) आँखों .... आँसू छलक पडते हैं।

V) अन्य लिंग रूप लिखिए :

पंडित, सूबेदार, पिता, नायक, गाय, नारी।

V) निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१७ वर्ष की आयु में भीमराव का विद्यार्थी जीवन में ही ९ वर्ष की रमाबाई के साथ विवाह हो गया। अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भीमराव बंबई के एलफिंस्टन कालेज में दाखिल हो गए। उस समय एक अछूत के लिए यह बहुत अनोखी बात थी। मगर रामजी सूबेदार भीमराव को और पढ़ाने में कठिनाई महसूस करने लगे, तो केलुस्कर गुरुजी भीमराव को बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड जी के पास ले गए। भीमराव ने अपनी विद्वत्ता एवं बुद्धिमत्ता से महाराजा का दिल जीत लिया। महाराजा ने भीमराव की उच्च शिक्षा के लिए रु.२५/- मासिक छात्रवृत्ति स्वीकृत कर दी। समाज की क्रूर जाति-व्यवस्था उन्हें पग-पग पर पीड़ा पहुँचाती रही। वे संस्कृत पढ़ना चाहते थे, मगर अछूत होने के कारण उन्हें संस्कृत भाषा नहीं पढ़ने दी गई। दृढ़ इच्छाशक्ति के धनी भीमराव ने १९१२ में अंग्रेजी और पारसी विषयों के साथ बंबई

विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा पास की थी। वे बी.ए. की परीक्षा पास करने वाले पहले महार थे।

प्रश्न :

१) भीमराव का विवाह किसके साथ हुआ?

२) भीमराव बंबई के किस कालेज में दाखिल हो गए?

३) केलुस्कर गुरुजी भीमराव को किस महाराजा के पास ले गये?

४) महाराजा ने भीमराव की उच्च शिक्षा के लिए कितने रुपयों की छात्रवृत्ति स्वीकृत कर दी?

५) भीमराव जी ने बी.ए. की परीक्षा किस वर्ष पास की?

VI) योग्यता विस्तार :

भारतीय संविधान में दिए गए नागरिकों के मूलाधिकारों के संबंध में जानकारी प्राप्त कीजिए।

* * * * * *

६. दिल का दौरा और एनजाइना

(कोरोनरी आर्टरी डिसीज, आई.एच.डी और हार्ट-अटैक)

– डॉ. यतीश अग्रवाल

लेखक परिचय :

डॉ. यतीश अग्रवाल वरिष्ठ चिकित्सक एवं चिकित्सा विज्ञान के सुप्रसिद्ध लेखक हैं। आपने अनेक रोगों के लक्षण और रोग-निदान के उपायों पर कई लेख लिखे हैं। आप संप्रति दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में वरिष्ठ आचार्य के पद पर सेवारत हैं। आप राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय आरोग्य सेवा संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। आप विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) के राष्ट्रीय सलाहकार के रूप में भी कार्यनिरत हैं।

आपके लेख अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आपने औषध विज्ञान संबंधी विषयों पर संशोधन लेख भी प्रस्तुत किया है। आपकी कई कृतियाँ भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, जापानी एवं चीनी भाषाओं में भी अनूदित हैं।

डॉ.अग्रवाल की प्रमुख पुस्तकों में – 'ए हंड्रेड्ज लाईफ्स', 'दग्दर बाबू', 'रिव्हर्सिंग बैक पैन', 'हाई ब्लड् प्रेशर', 'हार्ट अटैक' आदि प्रमुख हैं।

प्रस्तुत लेख 'स्वास्थ्य के २०० सवाल' पुस्तक से लिया गया है। आज के सामाजिक संघर्ष एवं तनाव से भरे जीवन में दिल का दौरा एक सामान्य बीमारी है। इससे बचाव और मुक्ति पाने के उपाय इस लेख में दिए गए हैं।

विद्यार्थियों को दिल का दौरा और एनज़ाइना जैसी घातक बीमारी से अवगत कराने के उद्देश्य से इस लेख का चयन किया गया है।

दिल का दौरा और एनजाइना किसे कहते हैं?

ये दो रूप हैं एक ही हृदय रोग के। हृदय ही शरीर का वह महत्वपूर्ण अंग है जो शरीर के समस्त भागों में जीवनदायी रक्त को पंप करता है। इस काम के लिए वह दिन-रात कड़ी मेहनत करता है और उसे स्वयं भी ऊर्जा की जरूरत पड़ती है। यह ऊर्जा उस तक पहुँचाती हैं – दो मुख्य कोरोनरी धमनियाँ और उनकी छोटी-बड़ी बहुत-सी शाखाएँ। जब कुछ कारणों से उनमें सिकुड़न आ जाती है तो हृदय को पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा नहीं मिल पाती। लेकिन हृदय तब भी किसी तरह काम चलाता रहता है। पर जब-जब उसे अधिक काम करने की जरूरत पड़ती है, यह स्थिति उसके लिए असहनीय हो जाती है और वह उस बोझ को सह पाने में अपने को असमर्थ पाता है। इसे ही कहते हैं एनजाइना।

इसका ही उग्र रूप है दिल का दौरा जिसे हार्ट-अटैक भी कहा जाता है। हृदय को ऊर्जा पहुँचाने वाली किसी एक धमनी में एकाएक रुकावट आ जाने से ही दिल का दौरा पड़ता है। ऊर्जा का स्त्रोत सूख जाने से हृदय की मांसपेशियाँ क्षतिग्रस्त हो जाती हैं और ठीक से काम नहीं कर पातीं। इससे हृदय की रक्त पंप करने की प्रक्रिया कमजोर पड़ने लगती है, धड़कन अनियमित हो जाती है और हृदय अवरुद्ध हो सकता है।

यह रोग किन कारणों से होता है?

अनियमित उच्च रक्तचाप यानी हाई ब्लड प्रेशर, डाइबेटिज़ (शुगर), मोटापा, मानसिक तनाव, अधिक मात्रा में धूम्रपान और वसायुक्त खाद्यों का सेवन, मदिरापान, रक्त में कोलेस्ट्रोल का बढ़ जाना, परिवार के अन्य सदस्यों में इस रोग का होना और व्यायाम तथा शारीरिक मेहनत न करना, इस रोग के मुख्य कारण समझे जाते हैं। इसके अलावा व्यक्तित्व का भी रोग से करीबी संबंध पाया गया है। ऐसे लोग जिनके स्वभाव में उग्रता होती है या जो प्रतिकूल परिस्थितियों को स्वीकार नहीं कर पाते और अपने गमों में भीतर ही भीतर घुलते रहते हैं, उनमें यह रोग अधिक देखा गया है। इसी तरह अकेले जिंदगी बसर करने वाले लोगों में भी यह रोग अधिक होता है। एक खास बात यह है कि यह बीमारी शहरी लोगों में ज्यादा पाई जाती है। शहरी जिंदगी की कशमकश और आधुनिकीकरण से जीवन के तौर-तरीकों में हुआ बदलाव दिल को रास

नहीं आया है। बढ़ता मानसिक तनाव, कुर्सी पर बैठे रहने की नौकरी, जिसमें कोई शारीरिक श्रम नहीं होता, जिंदगी की भाग-दौड़ जिसमें व्यायाम के लिए समय नहीं, खान-पान में आया अंतर और 'जंक फूड' का प्रचलन – इस सबसे इस रोग को बढ़ावा मिलता है।

यह किस उम्र का रोग है?

आमतौर से एनजाइना और दिल का दौरा ४५ वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तिओं में ही देखे जाते हैं। पर आजकल यह रोग युवावस्था में भी देखने को मिल रहा है। पिछले दिनों मेरे पास एक रोगी आया, उसकी उम्र सिर्फ २३ वर्ष थी। स्त्रियों में यह रोग, पुरुषों की अपेक्षा काफी कम संख्या में पाया जाता है।

रोग के प्रमुख लक्षण क्या हैं?

एनजाइना में लक्षण तभी उभरते हैं जब रोगी किसी तनावपूर्ण स्थिति से गुजर रहा होता है और उसके दिल को सामान्य से अधिक काम करने की जरूरत आ पड़ती है। ऐसे में उसके सीने में बाईं ओर दर्द उठने लगता है, भारीपन रहने लगता है, बेचैनी होती है और वह थका-थका सा महसूस करता है।

दिल के दौरे का प्रमुख लक्षण सीने में बाईं ओर प्राणलेवा दर्द उठना है। रोगी को ऐसा महसूस होता है जैसे उसकी छाती पर कोई बहुत भारी चीज रख दी गई हो। यह दर्द बाएँ कंधे, गर्दन, बाँह और अंगुलियों के पोरों तक फैल सकता है। इसके साथ ही जोरों का पसीना छूटने लगता है, घबराहट होती है और मितली की शिकायत भी हो सकती है। ज्यादा तेज दौरा हो तो रोगी बेहोश होकर गिर सकता है और उसकी धड़कन एकाएक रुक भी सकती है।

दिल का दौरा पड़ने पर प्राथमिक उपचार के लिए क्या-क्या कदम उठाने चाहिए?

तुरंत पास के डॉक्टर को बुला भेजें। तब तक रोगी को पीठ के बल लिटा दें, उसके कपड़े ढीले कर दें और कोई दर्दनाशक दवा दे दें। यदि वह पहले से इसका रोगी है और उसके पास सार्बिट्रेट की

गोली हो, तो उसे तुरंत वह गोली दे दें। उसे जीभ के नीचे रख कर वह चूसता रहे। अचानक दौरा पड़ जाए और रोगी की धड़कन रुक जाए तो उसे पीठ के बल सीधा लिटा कर उसके सीने की मालिश करें, मुँह से मुँह सटा कर साँस दें। तुरंत मोबाइल हृदय चिकित्सा वाहन बुला भेजें। उस समय एक-एक क्षण बहुमूल्य हो सकता है।

क्या किन्हीं अन्य रोगों में भी इस तरह के लक्षण उभर सकते हैं?

एनजाइना जैसे लक्षण कुछ अन्य रोगों में भी देखे जा सकते हैं। 'कोस्टोकोन्ड्राइटिस' नामक एक आम रोग में छाती में पसलियों और कास्टेल उपस्थियों के संगम स्थल पर जोरों का दर्द हो सकता है। इसी तरह 'सरवाइकल स्पोंडिलोसिस' में तंत्रिकाओं पर दबाव पड़ने से गर्दन, कंधे और बाजू में दर्द हो सकता है। लेकिन ये दर्द प्राय: लगातार बने रहते हैं जबकि एनजाइना का दर्द प्राय: रुक-रुक कर उठता है, चुभन-सा अपच के कारण भी बेचैनी हो सकती है, मितली की शिकायत हो सकती है। पर जब भी जरा-सा संशय हो, डॉक्टरी सलाह अवश्य ले लेनी चाहिए।

एनजाइना रोग का निदान (डाएगनोसिस) किस आधार पर किया जाता है?

इसमें व्यक्ति की बीमारी का इतिहास ही प्रमुख भूमिका निभाता है। इसके अलावा ई.सी.जी. भी महत्त्वपूर्ण है। कुछ रोगियों में 'ट्रेड मिल' नामक टेस्ट, जिसमें रोगी से खास मशीन पर व्यायाम करवाते समय उसका ई.सी.जी. रिकार्ड किया जाता है, यह भी बहुत उपयोगी है। दूसरे कुछ रोगियों में, 'हाल्टर' जाँच के अंतर्गत रोगी का २४ से ७२ घंटे तक ई.सी.जी. लेने की जरूरत भी पड़ सकती है। रोगी के बदन पर एक छोटी ई.सी.जी. मशीन लगा दी जाती है और वह आम दिनों की तरह अपना काम करता रहता है।

जिन रोगियों में तब भी निदान स्पष्ट नहीं हो पाता, उन्हें 'कोरोनरी एंजियोग्राफी' करवाने की सलाह दी जा सकती है। इसमें कोरोनरी धमनियों में एक रंगीन डाई (दवा) डालकर उनके एक्स-रे चित्र या फिल्म ले ली जाती है। उससे यह साफ हो जाता है कि कौन-सी कोरोनरी धमनी किस हद तक कहाँ रुकी हुई है।

और हार्ट-अटैक का निदान?

हार्ट-अटैक के तात्कालिक निदान में ई.सी.जी. और खास तरह के ब्लड टेस्ट इसकी निश्चित जानकारी देने में समर्थ हैं। बाद में जरूरत होने पर रोगी के दिल का न्यूक्लियर स्कैन कर यह भी पता लगाया जा सकता है कि दिल का कितना हिस्सा दौरे की चपेट में बेकार हुआ है। इसे 'मूगा टेस्ट' कहते हैं।

क्या एनजाइना का इलाज संभव है?

हाँ, ऐसी बहुत-सी दवाएँ उपलब्ध हैं, जो दिल पर पड़ने वाले भार को कम करती हैं और कोरोनरी धमनियों में फैलाव लाकर उस पर्याप्त खुराक पहुँचाने का काम करने में समर्थ होती हैं। इनमें सार्बिट्रेट, प्रोप्रेनोलाल, विरेपामिल, निफेडीपिन दवाएँ प्रमुख हैं। इसके अलावा रक्त में कोलेस्ट्रोल की मात्रा को घटाने के लिए भी एट्रोमिड जैसी दवाएँ उपलब्ध हैं।

जिन रोगियों में दवा से आराम नहीं आता, उनमें रुकी हुई कोरोनरी धमनियों को खोलने के लिए 'बैलून-एंजियोप्लास्टी' या 'बायपास ऑपरेशन' किया जा सकता है।

और हार्ट-अटैक के रोगी का इलाज किस तरह किया जाता है?

यह रोगी की स्थिति पर निर्भर करता है। रोगी तुरंत अस्पताल पहुँच जाए और सुविधा उपलब्ध हो तो रुक गई धमनी को बहाल करने के लिए धमनी में इस तरह की दवा (स्ट्रेप्टोकाइनेज या यूरोकाइनेज) इंजेक्ट की जा सकती है, जिससे धमनी फिर से खुल जाती है।

दिल की धड़कन बिगड़ गई हो, तो उसके लिए भी दवा और पेसमेकर की जरूरत पड़ सकती है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि पहले कुछ घंटों के लिए रोगी कड़ी डॉक्टरी निगरानी में रहे और उसे जरूरत के हिसाब से दवा, ऑक्सिजन आदि मिलती रहे। लेकिन इसके बावजूद कुछ रोगी कूच कर जाते हैं।

'बैलून-एंजियोप्लास्टी' तकनीक क्या है?

कोरोनरी धमनियों में सिकुड़न आने का एक बड़ा कारण है –

उनमें वसा की परत का जम जाना। जब एक या दो कोरोनरी धमनियाँ शुरू के हिस्से में इस तरह अवरुद्ध हों, तो उन्हें सामान्य बनाने के लिए ही 'बैलून एंजियोप्लास्टी' की जाती है। इसमें रोगी की टाँग या बाँह की किसी एक धमनी के रास्ते एक लंबी पतली ट्यूब अवरुद्ध हुई कोरोनरी धमनी तक पहुँचा दी जाती है। इस पहली ट्यूब के द्वारा फिर एक ऐसी ट्यूब भीतर डाली जाती है जिसके छोर पर एक गुब्बारा होता है। गुब्बारे को कोरोनरी धमनी के सिकुड़े हुए भाग में पहुँचाकर फुलाया जाता है, जिससे धमनी में जमी वसा की परत दब जाती है और धमनी पुन: खुल जाती है। इससे उस धमनी में रक्त बहाव सामान्य हो जाता है और रोग दूर हो जाता है।

बायपास सर्जरी में क्या किया जाता है? इस ऑपरेशन पर कितना खर्चा आता है? क्या यह भारत में संभव है?

बायपास सर्जरी में रुकी हुई कोरोनरी धमनी को बायपास करते हुए, टाँग की शिरा का टुकड़ा इस तरह लगाया जाता है कि दिल के उस भाग को फिर से पूरी-पूरी खुराक मिलने लगती है।

भारत में यह ऑपरेशन अब बहुत से अस्पतालों में सफलता-पूर्वक किया जा रहा है। इनमें पेरंबूर का दक्षिणी रेलवे अस्पताल, मद्रास का अपोलो अस्पताल, मुंबई का के.ई.एम. अस्पताल, वेल्लोर का क्रिश्चियन मेडिकल कालेज और नयी दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, एस्कोर्ट्स हार्ट इंस्टीट्यूट और बत्रा अस्पताल अग्रणी हैं। एक ऑपरेशन में यहाँ बीस हजार से पचास हजार रुपए का खर्च आता है।

हृदय रोग से बचाव के लिए और जिन रोगियों में यह रोग हो, उनमें रोग काबू में रखने के लिए क्या-क्या एहतियात बरतने चाहिए?

रोजाना व्यायाम करें। इसके लिए सुबह-शाम की सैर अच्छी है। हृदय रोगियों के लिए भी यह उचित है। पर ध्यान रखें कि एकाएक दिल पर ज्यादा बोझ न पड़े। पहले एक फर्लांग, फिर दो और इस तरह हर हफ्ते डॉक्टर से सलाह लेकर सैर की सीमा बढ़ाते जाएँ।

प्राय: समझा जाता है कि रात्रि-भोज के बाद सैर अच्छी रहती है।

लेकिन दिल के रोगी के लिए ठीक नहीं। उस दौरान उसके दिल को उतनी ऊर्जा नहीं मिल पाती, क्योंकि वह भोजन को पचाने में लगी होती है। इसलिए भोजन करने के कुछ समय बाद तक तेज चलने पर एकाएक रोग उग्र हो सकता है, एनजाइना का अटैक पड़ सकता है।

अपने वजन पर कड़ी नजर रखें। उसे बिलकुल न बढ़ने दें। जितना ज्यादा वजन होगा, दिल को उतना ही ज्यादा काम करना पड़ेगा, जो आपके लिए ठीक नहीं।

जिंदगी में मानसिक तनाव को भी दूर रखें। उतार-चढ़ाव, लाभ-हानि – इसे जीवन का अंग मान लें।

ब्लड प्रेशर बढ़ा हुआ हो या फिर शुगर (मधुमेह) हो, तो उनके लिए भी ठीक समय से दवा लेते रहें। इससे बीमार दिल को राहत मिलेगी।

खान-पान में क्या-क्या परहेज जरूरी है?

तले हुए, अधिक वसा वाले भोजन से बच कर रहें। भोजन केवल इतना लें कि रोजमर्रा की आवश्यकताएँ पूरी होती रहें। वजन बढ़े नहीं। घी-मक्खन, अंडे, चिकन, पूड़ी-कचौड़ी, समोसे, पराँठे, टिक्की, पकौड़ों आदि से दूर रहें। कैफिन भी दिल की धड़कन तेज करती है। इसलिए जहाँ तक हो सके, कॉफी और चाय भी कम से कम लें।

धूम्रपान का शौक फरमाते हों या मदिरा दिल को भाती हो, तो अपने दिल की खातिर, इन पर आज ही रोक लगा दें। कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि थोड़ी मात्रा में ली गई मदिरा दिल के लिए लाभदायक होती है। लेकिन यह सच नहीं है। अध्ययनों से यह साबित हो गया है कि मदिरा-सेवन दिल के लिए कतई अच्छा नहीं।

क्या हृदय-रोगियों के लिए सामान्य दांपत्य जीवन वर्जित है?

नहीं, कतई नहीं। अधिकतर रोगी दांपत्य जीवन का सुख भोग सकते हैं। सहवास पर रोक-टोक लगाना प्राय: अनावश्यक होता है। हाँ, कुछ सीमाएँ जरूर बाँधनी पड़ती हैं। पर ब्रह्मचर्य में लौटने की कतई जरूरत नहीं है।

कठिन शब्दार्थ :

ऊर्जा = शक्ति, बल; वसा = फैट, चरबी; गुब्बारा = हवा भरी रबर की थैली; खाद्य = आहार; निदान = चिकित्सा; भाना = अच्छा लगना।

I) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) हृदय रोग के दो रूप कौन-से हैं?

२) दिल का दौरा और एनज़ाइना आम तौर से कितने वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों में देखे जाते हैं?

३) 'मूगा टेस्ट' किसे कहते हैं?

४) कोरोनरी धमनियों में सिकुड़न आने का एक बड़ा कारण क्या है?

५) क्या बायपास सर्जरी भारत में संभव है?

६) हृदय रोगियों के लिए किस तरह का भोजन अच्छा नहीं है?

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) दिल का दौरा और एनजाइना किसे कहते हैं?

२) दिल का दौरा और एनजाइना किन कारणों से होता है?

३) दिल का दौरा और एनजाइना रोग के प्रमुख लक्षण क्या हैं?

४) दिल का दौरा पड़ने पर प्राथमिक उपचार के लिए क्या-क्या कदम उठाने चाहिए?

५) हार्ट अटैक के रोगी का इलाज किस तरह किया जाता है?

६) 'बैलून एंजियोप्लास्टी' तकनीक क्या है?

७) हृदय रोग से बचने व काबू पाने के लिए क्या-क्या एहतियात बरतने चाहिए?

III) कोष्ठक में दिए गए कारक चिन्हों से रिक्त स्थान भरिए :

(का, में, के, पर, की)

१) उसके सीने .... दर्द उठने लगता है।

२) इसके साथ ही जोरों .... पसीना छूटने लगता है।

३) मितली .... शिकायत भी हो सकती है।

४) पास .... डाक्टर को बुला भेजें।
५) कास्टेल उपस्थियों के संगम स्थल ....जोरों का दर्द हो सकता है।

IV) अन्य वचन रूप लिखिए :
पसली, तंत्रिका, दवा, सीमा, धमनी।

V) विलोम शब्द लिखिए :
पास, नीचे, छोटा, चैन, ज्यादा, समर्थ।

VI) योग्यता विस्तार :
मधुमेह और उसके निदान के संबंध में जानकारी हासिल कीजिए।

* * * * * *

७. मेरी बद्रीनाथ यात्रा

— विष्णु प्रभाकर

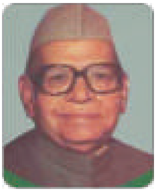

लेखक परिचय :

विष्णु प्रभाकर जी का जन्म २१ जून १९१२ को मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) के मीरापुर कस्बे में हुआ था। आपको बचपन से ही लेखन में रुचि थी। आपने प्रारंभ में 'प्रेमबंधु' तथा 'विष्णु' नाम से रचनाएँ लिखीं। आपने 'सुशील' नाम से समीक्षाएँ भी लिखीं। आपने एक जिज्ञासु के रूप में हिमालय, सभी तीर्थ स्थलों सहित लगभग संपूर्ण भारत का भ्रमण किया। आप भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य रहे।

'जमना-गंगा के नैहर में', 'अभियान और यात्राएँ', 'हँसते निर्झर दहकती भट्ठी', 'हिमशिखरों की छाया में', 'ज्योति पुंज हिमालय' आदि आपके प्रसिद्ध यात्रा-वृत्तांत हैं। इसके अतिरिक्त आपने साहित्य की विविध विद्याओं पर लेखनी चलाकर हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की है।

विष्णु प्रभाकर से रचित 'मेरी बद्रीनाथ यात्रा' एक प्रसिद्ध यात्रा वृत्तांत है। हिमालय की सुरम्य प्रकृति को देखते ही अकवि भी कवि, अदार्शनिक भी दार्शनिक बन जाता है। यहाँ भारत के कोने-कोने से लोग आते हैं। हिमशिखरों की भव्यता मन मोह लेती है। गंगा के अनेक रूप गरूड गंगा, विष्णु गंगा, पांडुकेश्वर मंदिर, शहतूत के वृक्ष, कुबेर शिला आदि दर्शनीय स्थलों के बाद बद्रीनारायण का मंदिर आता है । इस मंदिर में सरल भक्ति और प्रकृति के वैभव का आकर्षण है।

विद्यार्थियों में दर्शनीय स्थानों के प्रति रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से इस यात्रा-वृत्तांत का चयन किया गया है।

कालिदास ने हिमालय को **नगाधिराज** व्यर्थ ही नहीं कहा है। सदा बर्फ से ढँका रहनेवाला यह पर्वत संसार का सबसे ऊँचा पर्वत ही नहीं है, सबसे सुन्दर भी है। इसके अंचल में न जाने कितनी उन्मादिनी सदानीरा गंगाएँ निरन्तर **अलख जगाती** रहती हैं। इसी के **देवदारू** और **भोजपत्र** के वैभवशाली वनों में हिंसक पशुओं के साथ, नाभि में सुगन्ध भरे कस्तूरी मृग रहता है। यहाँ, जहाँ एक ओर संसार-प्रसिद्ध सिद्धों ने ज्ञान सिद्ध किया, वहाँ तीनों लोक की रूप की रानी उर्वशी ने भी जन्म लिया। यहीं हर समय नाना रूप-रंगवाले पक्षियों का कलरव होता रहता है। यहीं क्षण-भर में उत्तुंग हिम-शिखरों की रजत चोटियाँ अरूण किरणों का मुकुट पहनकर, इन्द्रधनुषों का निर्माण करती हैं और दूसरे ही क्षण ठण्डे कुहरे के श्वेत अन्धकार में खो जाती हैं। ऐसे प्रदेश में पहुँचकर अकवि भी कवि और अदार्शनिक भी दार्शनिक बन जाता है।

इसलिए चाहे गंगा की खोज हो या विरही यक्ष के दूत को रास्ता दिखाना हो, या शिव-पार्वती का नृत्य देखना हो, देवता की आराधना करनी हो या प्रकृति का रूप-दर्शन — भूतकाल में जहाँ तक दृष्टि जाती है — मनुष्य हिमालय के दुर्गम प्रदेशों की यात्रा करता आ रहा है और इसलिए जब हमें पिछली मई में एक बार फिर बद्रीनाथ जाने का अवसर मिला तो सच मानिये, बेहद खुशी हुई।

एक बार सितम्बर-अक्तूबर में हम उधर हो आये थे। पर वह यात्रा का अवसर नहीं है, सैर का है। निपट नीला आकाश, निर्मल जल, भीड़ नहीं, मेघ, कुहरे और हिम के आवरण से मुक्त प्रकृति, आँखें जहाँ अटक जाती हैं मन भी वहीं रम जाता है। इसके विपरीत मई की यात्रा 'यात्रा' है। उसका अपना आकर्षण है। धर्मभीरू भीड़ का कोलाहल भारत की सांस्कृतिक एकता के दर्शन, विभिन्न प्रदेशों से विभिन्न वेषभूषा पहने, विभिन्न स्वरों में एक ही देवता को पुकारते, अनगिनत नर-नारी निकल पड़ते हैं, एक ही मार्ग पर, यह प्रमाणित करते हुए कि विभिन्नता में सौन्दर्य है, शक्ति है, विभेद नहीं है, विग्रह नहीं है।

हमारा दल भी ऐसा ही दल था। उसमें स्त्री और पुरुष, युवक और वृद्ध, वैष्णव और जैन, व्यापारी और विद्यार्थी, शासक और सम्पादक, प्रकाशक और लेखक, राजस्थानी, हिन्दी और मराठी भाषा-भाषी सभी थे। सीधे बद्रीनाथ जाने के लिए चाहे आप पौड़ी होकर जायें या हरिद्वार,

अब पीपलकोटी तक बस जाती है। वहाँ से कुल ३१ मील का पैदल मार्ग रह जाता है, लेकिन हम लोग यात्रा के नियम के अनुसार पहले केदारनाथ गये। वहाँ से लौटते हुए बीच में से हम एक ऐसे मार्ग पर मुड़ गये जो हमें चमौली पहुँचाता था। वहाँ से पीपलकोटी के लिये बस मिलती है। इसी मार्ग पर केदारनाथ की शीत-ऋतु की राजधानी उषीमठ और हिन्दुओं का सबसे ऊँचे स्थान पर बना हुआ मन्दिर तुंगनाथ है। यह मार्ग अपेक्षाकृत भयानक है, इसलिए इसका सौन्दर्य भी अभी अछूता है।

हम प्रतिदिन सवेरे तीन बजे उठते थे। बिस्तर समेटते, नित्य-कर्म से छुट्टी पाते और भारवाहकों को सामान सौंपकर चार बजे तक आगे बढ़ जाते थे। बिजली की रोशनी में जीनेवाले हम लोग जैसे उस प्रदेश के प्राकृतिक प्रकाश में राहत पाते थे। जैसे हम वहाँ चकाचौंध की थकान उतारने ही गये थे। प्रतिदिन १२ से १८ मील तक चलते। कहीं ऊँचा उठता चला गया पथरीला पथ, कहीं नीचे भागता हुआ चट्टानी मार्ग, सँकरी पगडंडी, एक और भूधराकार चट्टानें, दूसरी ओर अतल में बहती हुई सरिताएँ, कहीं सघन बन, तरह-तरह के पेड़, जंगली फूल, चहचहाते पक्षी, कहीं तेज धूप, निपट छायाहीन मार्ग, कहीं भयंकर शीत और कहीं वर्षा, बर्फ, तूफान। साथ में चलता यात्रियों का कारवाँ, तरह-तरह की पोशाकें पहने, तरह-तरह की बोलियाँ बोलते, धनी-निर्धन स्त्री-पुरुष, बालक-बूढ़े, कुछ तो आँखों में समाकर रह गये हैं।

तारकेश्वर की वह ८३ वर्ष बुढ़िया जिसके मुँह में न दाँत न पेट में आँत, ८ वर्ष की वह प्यारी बच्ची सन्ध्या, जो २०० मील के उस दुर्गम पथ पर पैदल चली, बंगाली दल की वह धर्मभीरू तरूणी जब भी बोलती आदर और स्नेह छलछला पड़ता, आन्ध्र देश की वे कन्याएँ जो टोपे पहने बराबर गाती रहतीं और उत्तर प्रदेश का वह बातून पर बड़े दिलवाला बूढ़ा, जो पति-पुत्रहीना अपनी बेटी का शोक कम करने के लिए उसे यात्रा करवा रहा था। उनमें कुछ घोड़ों पर थे, कुछ डाँडी पर, कुछ कंडियों में भी थे। वैसे कंडियों में बच्चे बैठते हैं। अधिकांश यात्री पैदल चलते हैं। उन्हीं के साथ धीरे-धीरे चलते हैं बोझ से दबे कुली और हाँफते डाँडी वाले.....।

इन सबसे मिलते, सुख-दुःख की बातें करते, बद्री विशाल की जय बुलवाते, हँसते खिलखिलाते पहाड़ी ढ़लान पर बने छोटे-छोटे गाँवों, खेतों में काम करते नर-नारियों को देखते, उस स्मृति को कैमरे में सुरक्षित

रखते, चट्टियों पर चाय-नाश्ता लेते और उनसे झगड़ते हम अगले पड़ाव पर पहुँच जाते। वहाँ नाना प्रकार से थकान उतारते, नहाते, कपड़े धोते, सामान खरीदकर खाना बनाते या बनवाते, खाते, घूमते, प्रार्थना करते और कभी-कभी लड़ भी पड़ते। कभी-कभी अनायास ही हममें से कोई हँसी का पात्र बन जाता। एक दिन एक छोटी-सी चट्टी पर खाना खा रहे थे कि सहसा हमारे दल के एक वयोवृद्ध सज्जन चिल्ला उठे, 'अरे बिच्छू-बिच्छू!' हम चौंके, 'कहाँ?' वह घिघिया रहे थे। किसी तरह कहा, 'यह मेरी जाँघ पर।' हाय राम, वह तो सचमुच बिच्छू लग रहा था पर वह चलता क्यों नहीं। सब मोमबत्तियाँ उठाकर उसे पकड़ने दौड़े, पर जानते हैं वह क्या निकला – चाबियों का गुच्छा जो उनकी जेब से लटक-कर जाँघ पर आ गया था।

लेकिन ये कथाएँ कहाँ तक कही जाएँ। उषीमठ होते हुए २९ मई को सवेरे ठीक चार बजे हम तुंगनाथ की ओर चले। १२,०८० फुट ऊँचे इस शिखर से हिम-शिखरों का जो भव्य दृश्य देखने को मिला, वह अपूर्व था। इतना अपूर्व कि तीन मील की वह प्राणलेवा चढ़ाई और उससे भी अधिक पैर तोड़ देनेवाली उतराई हमें तनिक भी नहीं थका सकी। अन्धकार जैसे-जैसे गदराता गया, वैसे-वैसे ही उन शिखरों का रंग पलटता गया। पहले उषा और फिर अरुद्ध किरणों ने जैसे ही उनका स्पर्श किया, प्रकृति झट अँगड़ाई लेकर उठ बैठी। अब तक एक के बाद एक शिखर स्मित हास्य से लगभग जगमग कर उठा जैसे अप्सराएँ खिलखिला उठी हों, उनकी इन्द्रधनुषी साड़ी हवा में उड़ने लगी हो। बुरांस के फूल झूम-झूमकर नाचने लगे। पक्षी संगीत संजोने लगे। गंगोत्री, जमनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ, चौखम्बा, सभी रजत-शिखर सूर्य के प्रकाश में चमक रहे थे। चौखम्बा तो ऐसा लग रहा था जैसे देवताओं के खेल के मैदान को किसी कुशल चित्रकार ने धवल रंग में लिख दिया हो। रजत, स्वर्ण प्लातिनम का ठोस रूप लेते इन्हीं हिम-शिखरों को देखने यात्री इतने कष्ट उठाकर आते हैं पर विरलों को ही यह सौभाग्य मिलता है, क्योंकि दोपहर होते-होते वहाँ सब कुछ कुहरे के आवरण में छिप जाता है।

उस सौभाग्य को हम देर तक आँखों में सँजोते रहे पर कब तक? बद्रीनाथ हमें पुकार रहे थे। सो तुंगनाथ, सगरवन सभी पीछे छूट गये।